The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता एवं उसके समक्ष विद्यमान बाधाओं का अध्ययन

Earam Nahid
School Teacher (TGT) Email: earamnahid1998@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21470208

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 13-05-2026

Accepted: 29-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

मुस्लिम छात्राएँ, उच्च शिक्षा, सहभागिता, सामाजिक बाधाएँ, आर्थिक बाधाएँ, पारिवारिक बाधाएँ, संस्थागत बाधाएँ.

ABSTRACT

उच्च शिक्षा सामाजिक, आर्थिक एवं बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। भारत में महिलाओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ी है, फिर भी मुस्लिम छात्राओं को सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा प्रमुख बाधाओं का अध्ययन करना था। अध्ययन में मात्रात्मक शोध उपागम का प्रयोग किया गया। दरभंगा (बिहार) की 100 मुस्लिम छात्राओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्व-निर्मित पाँच-बिंदु लिकर्ट मापनी आधारित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। उपकरण की मुख वैधता विशेषज्ञों द्वारा सुनिश्चित की गई तथा विश्वसनीयता (Cronbach's Alpha = 0.85) प्राप्त हुई। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य एवं मानक विचलन द्वारा किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि उच्च शिक्षा में सहभागिता का स्तर मध्यम ($M = 3.39$, $SD = 1.12$) है। सामाजिक ($M = 3.40$), आर्थिक ($M = 3.41$), पारिवारिक ($M = 3.38$) तथा संस्थागत बाधाओं का स्तर भी मध्यम पाया गया। आर्थिक बाधाएँ अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली रहीं। अध्ययन के आधार पर छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, संस्थागत सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण, सुरक्षित शैक्षिक वातावरण तथा बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई।

प्रस्तावना

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास का आधार मानी जाती है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्तियों में तार्किक चिंतन, निर्णय क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व कौशल का भी विकास करती है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा व्यक्ति को उन्नत ज्ञान, व्यावसायिक दक्षताओं, अनुसंधान क्षमता तथा नवाचार की ओर प्रेरित करती है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-4 (Sustainable Development Goal-4) में समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा सभी के लिए समान शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया है। भारत विश्व की सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणालियों में से एक है। पिछले दो दशकों में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE 2021–22) के अनुसार देश में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन निरंतर बढ़ रहा है तथा महिला विद्यार्थियों की भागीदारी में भी सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। इसके बावजूद सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक आधार पर विभिन्न समुदायों के मध्य उच्च शिक्षा तक पहुँच और सहभागिता में असमानताएँ अभी भी विद्यमान हैं। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समुदायों की छात्राओं के लिए उच्च शिक्षा तक पहुँच अनेक संरचनात्मक चुनौतियों से प्रभावित होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा व्यवस्था के निर्माण पर बल देती है तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों (Socio-Economically Disadvantaged Groups) की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ाने को राष्ट्रीय प्राथमिकता मानती है। इस नीति में महिलाओं तथा अल्पसंख्यक समुदायों की शिक्षा को सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता तथा सतत विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इसलिए मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता का अध्ययन वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में विशेष महत्व रखता है। भारत का मुस्लिम समुदाय देश का एक महत्वपूर्ण धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में मुस्लिम समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, फिर भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मुस्लिम छात्राओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। उपलब्ध शोध यह संकेत देते हैं कि आर्थिक विषमताएँ, पारिवारिक परिस्थितियाँ, सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताएँ, लैंगिक भेदभाव, सुरक्षित परिवहन का अभाव, उच्च शिक्षण संस्थानों की दूरी तथा छात्रवृत्ति एवं शैक्षिक सुविधाओं के संबंध में सीमित जानकारी जैसी अनेक परिस्थितियाँ उनकी उच्च शिक्षा में सहभागिता को प्रभावित करती हैं। Malik (2026) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा तक पहुँच सामाजिक, आर्थिक तथा संस्थागत कारकों के संयुक्त प्रभाव से निर्धारित होती है तथा समावेशी नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता है। इसी प्रकार Chowdhury et al. (2024) ने मुस्लिम अभिभावकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करते हुए पाया कि माता-पिता की शैक्षिक सोच, आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक धारणाएँ मुस्लिम छात्राओं के उच्च शिक्षा में प्रवेश और निरंतरता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि सकारात्मक अभिभावकीय दृष्टिकोण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों को प्रोत्साहित करता है, जबकि रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताएँ उनके शैक्षिक अवसरों को सीमित कर सकती हैं। Hussain, Khan और Khan (2018) ने भारतीय मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करते

हुए बताया कि गरीबी, अभिभावकों की कम शैक्षिक जागरूकता, बड़े परिवार का आकार तथा शिक्षा के प्रति सीमित सकारात्मक दृष्टिकोण मुस्लिम छात्राओं की शिक्षा में प्रमुख अवरोध हैं। इसी प्रकार Jahan (2025) ने उल्लेख किया कि सामाजिक परम्पराएँ, प्रारम्भिक विवाह, महिलाओं की सुरक्षा संबंधी चिंताएँ तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करती हैं। हाल के अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा केवल आर्थिक समस्या का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, लैंगिक तथा संस्थागत कारकों के परस्पर प्रभाव का परिणाम है। अनेक छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं, किन्तु पारिवारिक निर्णय, सामाजिक अपेक्षाएँ, परिवहन एवं सुरक्षा संबंधी समस्याएँ तथा आर्थिक संसाधनों की कमी उनके शैक्षिक मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं। इन परिस्थितियों के कारण अनेक प्रतिभाशाली छात्राएँ उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं या बीच में ही अपनी शिक्षा छोड़ने के लिए विवश हो जाती हैं।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता को प्रभावित करने वाले कारकों का वैज्ञानिक अध्ययन समय की आवश्यकता है। यद्यपि इस विषय पर कुछ अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी विभिन्न क्षेत्रों में मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान बाधाओं की प्रकृति एवं स्तर में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। इसलिए स्थानीय स्तर पर इस विषय का अध्ययन न केवल शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों को प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने में भी सहायता प्रदान कर सकता है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन "मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता एवं उनके समक्ष विद्यमान बाधाओं का अध्ययन" विषय पर केंद्रित है, जिसमें मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं का मात्रात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध अध्ययन की सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य पृष्ठभूमि को समझने के लिए साहित्य समीक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके माध्यम से संबंधित विषय पर पूर्व में किए गए अध्ययनों, उनके निष्कर्षों तथा शोध-अंतर (Research Gap) का व्यवस्थित अवलोकन किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं से संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध शोध अध्ययनों, सरकारी प्रतिवेदनों तथा नीतिगत दस्तावेजों का अध्ययन किया गया। इन अध्ययनों के विश्लेषण से विषय की वर्तमान स्थिति को समझने, शोध की आवश्यकता को स्पष्ट करने तथा प्रस्तुत अध्ययन की दिशा निर्धारित करने में सहायता प्राप्त हुई।

सच्चर समिति (2006) ने भारत सरकार के निर्देश पर मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का व्यापक अध्ययन किया। समिति ने जनगणना, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण तथा अन्य सरकारी आँकड़ों के आधार पर

निष्कर्ष निकाला कि मुस्लिम समुदाय शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय औसत से पीछे है तथा मुस्लिम महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। रिपोर्ट में पाया गया कि आर्थिक अभाव, गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संस्थानों तक सीमित पहुँच, छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रति कम जागरूकता, सामाजिक पिछड़ापन तथा अवसरों की असमानता मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता को प्रभावित करती है। समिति ने अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में शैक्षणिक सुविधाओं के विस्तार, छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तथा उच्च शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करने की अनुशंसा की। यह रिपोर्ट वर्तमान अध्ययन के लिए आधारभूत दस्तावेज़ के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। Malik (2023) ने भारत में मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक अनुभवों एवं उच्च शिक्षा संबंधी आकांक्षाओं का अध्ययन किया। अध्ययन में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा से संबंधित सामाजिक, आर्थिक तथा संस्थागत चुनौतियों का विश्लेषण किया गया। शोध में पाया गया कि मुस्लिम महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया में दोहरे प्रकार के वंचन (double disadvantage) का सामना करना पड़ता है। एक ओर वे लैंगिक असमानता से प्रभावित होती हैं, वहीं दूसरी ओर धार्मिक अल्पसंख्यक होने के कारण उन्हें शैक्षिक अवसरों तक समान पहुँच प्राप्त नहीं हो पाती। अध्ययन में आर्थिक कमजोरी, निम्न शैक्षिक उपलब्धि, गुणवत्तापूर्ण संस्थानों तक सीमित पहुँच तथा सामाजिक रूढ़ियों को प्रमुख बाधाओं के रूप में चिन्हित किया गया। शोधकर्ता ने छात्रवृत्ति, संस्थागत सहयोग तथा समावेशी नीतियों को मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ाने के लिए आवश्यक बताया। Rahiman (2023) ने भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत 30 मुस्लिम छात्राओं के अनुभवों का गुणात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के प्रति सकारात्मक थीं, किन्तु उन्हें परिवार की अपेक्षाओं, सामाजिक मान्यताओं तथा आर्थिक परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि माता-पिता का सहयोग, आर्थिक स्थिति तथा सुरक्षित शैक्षिक वातावरण छात्राओं की उच्च शिक्षा में निरंतरता के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि मुस्लिम छात्राओं की शैक्षिक प्रगति को समझने के लिए केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का संयुक्त विश्लेषण आवश्यक है। Hussain, Khan और Khan (2018) ने भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए पाया कि गरीबी, अभिभावकों की सीमित शैक्षिक जागरूकता, बड़े परिवार का आकार तथा सामाजिक रूढ़ियाँ मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में प्रमुख बाधाएँ हैं। अध्ययन में यह भी बताया गया कि उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए आर्थिक सहायता के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता, अभिभावकीय समर्थन तथा सकारात्मक शैक्षिक वातावरण की भी आवश्यकता होती है। शोधकर्ताओं ने महिला शिक्षा को सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम माना तथा मुस्लिम समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर बल दिया। Chowdhury et al. (2024) ने भारत में मुस्लिम अभिभावकों के अपनी बेटियों की उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का व्यवस्थित समीक्षा (Systematic Review) के माध्यम से अध्ययन किया। अध्ययन में 72 शोधों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में अभिभावकों का दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आर्थिक स्थिति,

सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक मान्यताएँ तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता उनकी उच्च शिक्षा तक पहुँच को प्रभावित करते हैं। अध्ययन ने सुझाव दिया कि समुदाय आधारित जागरूकता कार्यक्रम, छात्रवृत्ति योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन तथा अभिभावकों की सकारात्मक सहभागिता मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में वृद्धि कर सकती है। Jahan (2025) ने अल्पसंख्यक महिलाओं की उच्च शिक्षा संबंधी समस्याओं का अध्ययन करते हुए विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि यद्यपि इस्लाम शिक्षा को महत्व देता है, फिर भी सामाजिक परम्पराएँ, आर्थिक कठिनाइयाँ, लैंगिक भेदभाव, प्रारम्भिक विवाह तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों की कमी मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा में प्रमुख अवरोध हैं। अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि सरकारी योजनाओं तथा छात्रवृत्ति कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन से उनकी शैक्षिक भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है। AISHE (2021–22) के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा में महिला विद्यार्थियों की सहभागिता में निरंतर वृद्धि हुई है, तथापि धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों विशेषकर मुस्लिम विद्यार्थियों का नामांकन उनकी जनसंख्या के अनुपात में अभी भी अपेक्षाकृत कम है। रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा में समावेशिता बढ़ाने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए लक्षित नीतियों, छात्रवृत्ति योजनाओं तथा संस्थागत सहयोग की आवश्यकता है। यह रिपोर्ट वर्तमान अध्ययन के लिए मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा की समकालीन स्थिति को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती।

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता अनेक सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक तथा संस्थागत कारकों से प्रभावित होती है। अधिकांश शोधों में आर्थिक अभाव, अभिभावकीय दृष्टिकोण, सामाजिक रूढ़ियाँ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अवसरों की कमी को प्रमुख बाधाओं के रूप में चिन्हित किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय संदर्भ में विशेषकर स्थानीय स्तर पर मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता एवं उनके समक्ष विद्यमान बाधाओं का मात्रात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। यही अंतर प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

भारत में उच्च शिक्षा को सामाजिक एवं आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। यद्यपि उच्च शिक्षा में छात्राओं की सहभागिता में वृद्धि हुई है, फिर भी मुस्लिम छात्राएँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं के कारण अपेक्षित स्तर पर उच्च शिक्षा से जुड़ नहीं पा रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा सतत विकास लक्ष्य-4 (SDG-4) सभी के लिए समान एवं समावेशी शिक्षा पर बल देते हैं। इसलिए मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान बाधाओं का अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है। उपलब्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि इस विषय पर कुछ अध्ययन किए गए हैं, किन्तु स्थानीय स्तर पर मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता एवं उनके समक्ष विद्यमान बाधाओं का मात्रात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम

है। यह अध्ययन इस शोध-अंतर को कम करने का प्रयास करेगा। प्रस्तुत अध्ययन शैक्षिक, सामाजिक एवं नीतिगत दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके निष्कर्ष मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करने में सहायक होंगे तथा नीति-निर्माताओं, शिक्षकों एवं शैक्षणिक संस्थानों को समावेशी एवं प्रभावी शैक्षिक योजनाएँ बनाने में उपयोगी आधार प्रदान करेंगे। साथ ही यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण संदर्भ सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता के स्तर का अध्ययन करना।
2. मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान सामाजिक बाधाओं का अध्ययन करना।
3. मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान आर्थिक बाधाओं का अध्ययन करना।
4. मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान पारिवारिक बाधाओं का अध्ययन करना।
5. मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान संस्थागत बाधाओं का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक शोध उपागम (Quantitative Research Approach) के अंतर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं का अध्ययन करना है। अध्ययन की जनसंख्या में बिहार राज्य के दरभंगा जिले में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही मुस्लिम छात्राएँ सम्मिलित थीं। इनमें से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (Purposive Sampling Technique) के माध्यम से 100 मुस्लिम छात्राओं का चयन किया गया। अध्ययन के लिए आवश्यक आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्व-निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उससे संबंधित सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं से जुड़े कथनों को सम्मिलित किया गया, जिन्हें पाँच-बिंदु लिकर्ट मापनी (Five-Point Likert Scale) पर तैयार किया गया। प्रश्नावली की वैधता (Validity) सुनिश्चित करने के लिए इसे शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र के विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया गया तथा उनके सुझावों के आधार पर आवश्यक संशोधन किए गए। इस प्रकार उपकरण की मुख वैधता (Face Validity) स्थापित की गई। उपकरण की विश्वसनीयता (Reliability) का निर्धारण क्रोनबाख अल्फा (Cronbach's Alpha) विधि द्वारा किया गया, जिसका गुणांक 0.85 प्राप्त हुआ, जो उपकरण की उच्च आंतरिक संगति (High Internal Consistency) को दर्शाता है। संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण

वर्णनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु माध्य (Mean) तथा मानक विचलन (Standard Deviation) का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी शोध अध्ययन में संकलित आँकड़ों का व्यवस्थित विश्लेषण एवं उनकी वैज्ञानिक व्याख्या अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि इसी के आधार पर अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति तथा निष्कर्षों की पुष्टि की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन में मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं से संबंधित आँकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप प्रत्येक आयाम के लिए माध्य (Mean) एवं मानक विचलन (Standard Deviation) की गणना की गई तथा प्राप्त परिणामों की व्याख्या क्रमवार प्रस्तुत की गई है।

उद्देश्य–1 मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता के स्तर का अध्ययन करना।

तालिका 1 मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता का स्तर (N = 100)

आयाम	प्रश्न संख्या	N	Mean	SD	स्तर
उच्च शिक्षा में सहभागिता	Q1–Q6	100	3.39	1.12	मध्यम

व्याख्या

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 100 मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता का माध्य (Mean = 3.39) तथा मानक विचलन (SD = 1.12) प्राप्त हुआ। प्राप्त माध्य यह संकेत करता है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता का स्तर मध्यम है। इसका तात्पर्य यह है कि अधिकांश छात्राएँ उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं तथा अपनी शिक्षा को जारी रखने एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के प्रति रुचि प्रदर्शित करती हैं, किन्तु उनकी सहभागिता अभी अपेक्षित उच्च स्तर तक नहीं पहुँच सकी है। वहीं मानक विचलन का मान यह दर्शाता है कि छात्राओं के उत्तरों में कुछ भिन्नता विद्यमान है, अर्थात् सभी छात्राओं की सहभागिता का स्तर समान नहीं है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता मध्यम स्तर की है। अतः उनकी सहभागिता को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए शैक्षिक प्रेरणा, आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता तथा अनुकूल शैक्षिक वातावरण सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य–2 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान सामाजिक बाधाओं का अध्ययन करना।

तालिका 2 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान सामाजिक बाधाओं का स्तर (N = 100)

आयाम	प्रश्न संख्या	N	Mean	SD	स्तर
सामाजिक बाधाएँ	Q7–Q12	100	3.40	1.11	मध्यम

व्याख्या

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 100 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान सामाजिक बाधाओं का माध्य (Mean = 3.40) तथा मानक विचलन (SD = 1.11) प्राप्त हुआ। प्राप्त माध्य यह दर्शाता है कि मुस्लिम छात्राएँ सामाजिक बाधाओं का अनुभव मध्यम स्तर तक करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक परम्पराएँ, रूढ़िवादी सोच, रिश्तेदारों का हस्तक्षेप, सामाजिक सुरक्षा की चिंता तथा लड़कियों की शिक्षा के प्रति समाज का दृष्टिकोण उनकी उच्च शिक्षा को कुछ सीमा तक प्रभावित करता है। यद्यपि सभी छात्राएँ समान रूप से इन बाधाओं का सामना नहीं करतीं, फिर भी मानक विचलन (SD = 1.11) से यह स्पष्ट होता है कि उत्तरों में कुछ भिन्नता विद्यमान है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि सामाजिक बाधाएँ मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता को मध्यम स्तर तक प्रभावित करती हैं। अतः समाज में बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना, लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करना तथा जागरूकता कार्यक्रमों का प्रभावी संचालन करना आवश्यक है।

उद्देश्य–3 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान आर्थिक बाधाओं का अध्ययन करना।

तालिका 3 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान आर्थिक बाधाओं का स्तर (N = 100)

आयाम	प्रश्न संख्या	N	Mean	SD	स्तर
आर्थिक बाधाएँ	Q13–Q18	100	3.41	1.14	मध्यम

व्याख्या

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 100 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान आर्थिक बाधाओं का माध्य (Mean = 3.41) तथा मानक विचलन (SD = 1.14) प्राप्त हुआ। प्राप्त माध्य यह संकेत करता है कि आर्थिक बाधाएँ मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा को मध्यम स्तर तक प्रभावित करती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा का व्यय, परिवार की आर्थिक स्थिति, अध्ययन सामग्री की उपलब्धता तथा छात्रवृत्ति जैसी आर्थिक परिस्थितियाँ छात्राओं की शिक्षा पर प्रभाव डालती हैं। वहीं मानक विचलन का मान यह दर्शाता है कि सभी छात्राओं की

आर्थिक परिस्थितियाँ समान नहीं हैं, जिसके कारण उनके उत्तरों में कुछ भिन्नता पाई गई। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि आर्थिक बाधाएँ मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक हैं। अतः आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार, वित्तीय सहायता तथा अन्य शैक्षिक सहयोग उपलब्ध कराकर उनकी उच्च शिक्षा में सहभागिता को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

उद्देश्य–4 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान पारिवारिक बाधाओं का अध्ययन करना।

तालिका 4 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान पारिवारिक बाधाओं का स्तर (N = 100)

आयाम	प्रश्न संख्या	N	Mean	SD	स्तर
पारिवारिक बाधाएँ	Q19–Q24	100	3.38	1.11	मध्यम

व्याख्या

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 100 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान पारिवारिक बाधाओं का माध्य (Mean = 3.38) तथा मानक विचलन (SD = 1.11) प्राप्त हुआ। प्राप्त माध्य यह इंगित करता है कि पारिवारिक बाधाएँ मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा को मध्यम स्तर तक प्रभावित करती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियाँ, घरेलू कार्यों का दबाव, अभिभावकों की अनुमति तथा परिवार की अपेक्षाएँ छात्राओं की शैक्षिक प्रगति को कुछ सीमा तक प्रभावित करती हैं। वहीं मानक विचलन का मान यह दर्शाता है कि सभी छात्राओं की पारिवारिक परिस्थितियाँ समान नहीं हैं, जिसके कारण उनके उत्तरों में कुछ भिन्नता पाई गई। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पारिवारिक सहयोग एवं प्रोत्साहन मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः परिवारों में बालिकाओं की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने तथा उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य–5 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान संस्थागत बाधाओं का अध्ययन करना।

तालिका 5 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान संस्थागत बाधाओं का स्तर (N = 100)

आयाम	प्रश्न संख्या	N	Mean	SD	स्तर
संस्थागत बाधाएँ	Q25–Q30	100	3.40	1.13	मध्यम

व्याख्या

तालिका 5 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 100 मुस्लिम छात्राओं के समक्ष विद्यमान संस्थागत बाधाओं का माध्य (Mean = 3.40) तथा मानक विचलन (SD = 1.13) प्राप्त हुआ। प्राप्त माध्य यह दर्शाता है कि संस्थागत

बाधाएँ मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा को मध्यम स्तर तक प्रभावित करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि महाविद्यालय की दूरी, सुरक्षित परिवहन की कमी, शैक्षणिक सुविधाओं का अभाव, छात्रवृत्ति संबंधी जानकारी की कमी तथा पर्याप्त शैक्षणिक मार्गदर्शन न मिलना छात्राओं की उच्च शिक्षा में कुछ सीमा तक बाधा उत्पन्न करते हैं। मानक विचलन का मान यह बताता है कि छात्राओं के उत्तरों में भिन्नता विद्यमान है, अर्थात सभी छात्राएँ संस्थागत बाधाओं का समान रूप से अनुभव नहीं करतीं। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि संस्थागत सुविधाओं को अधिक सुलभ, सुरक्षित और सहयोगात्मक बनाकर मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है।

चर्चा एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं का अध्ययन करना था। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता का स्तर मध्यम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि अधिकांश छात्राएँ उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं तथा अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रयासरत हैं, तथापि विभिन्न प्रकार की बाधाओं के कारण उनकी सहभागिता अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाती है। अध्ययन में सामाजिक बाधाओं का स्तर भी मध्यम पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक मान्यताएँ, पारंपरिक सोच तथा सुरक्षा संबंधी चिंताएँ आज भी मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार आर्थिक बाधाओं का माध्य अन्य आयामों की अपेक्षा अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि आर्थिक संसाधनों की कमी, उच्च शिक्षा का बढ़ता व्यय तथा छात्रवृत्ति संबंधी समस्याएँ छात्राओं की शैक्षिक प्रगति में महत्वपूर्ण बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। अध्ययन के निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि पारिवारिक बाधाएँ मुस्लिम छात्राओं की शिक्षा को मध्यम स्तर तक प्रभावित करती हैं। परिवार का सहयोग, अभिभावकों का दृष्टिकोण तथा घरेलू उत्तरदायित्व छात्राओं की उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त संस्थागत बाधाओं का भी मध्यम स्तर प्राप्त हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महाविद्यालय की दूरी, परिवहन की समस्या, शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा मार्गदर्शन जैसी संस्थागत परिस्थितियाँ भी छात्राओं की सहभागिता को प्रभावित करती हैं। प्राप्त निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों एवं सच्चर समिति (2006), Malik (2023), Hussain et al. (2018) तथा Jahan (2025) के निष्कर्षों से काफी हद तक मेल खाते हैं, जिनमें मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं संस्थागत कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ाने के लिए केवल आर्थिक सहायता पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता, पारिवारिक सहयोग तथा संस्थागत सुविधाओं में सुधार भी समान रूप से आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता मध्यम स्तर की है तथा उनके समक्ष सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत सभी प्रकार की बाधाएँ विद्यमान हैं। अध्ययन में

आर्थिक बाधाएँ अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली पाई गईं, जबकि सामाजिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाएँ भी उनकी शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ाने के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है। अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्रवृत्ति योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन, आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं को वित्तीय सहायता, सुरक्षित एवं सुलभ शैक्षणिक वातावरण, गुणवत्तापूर्ण संस्थागत सुविधाएँ तथा अभिभावकों एवं समाज में बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। इन उपायों के माध्यम से मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में सहभागिता को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है तथा समावेशी एवं समान अवसर आधारित उच्च शिक्षा प्रणाली के निर्माण की दिशा में सार्थक प्रगति की जा सकती है।

References

1. Alam, M. J., & Rahman, S. R. (2026). भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा का विकास. *द अकैडमिक, 4*(2). https://www.researchgate.net/publication/404050113_bharatiya_jnana_pranali_ke_madhyama_se_mulya_adharita_siksa_ka_vikasa
2. Alam, M. J., Rahman, S. R., Hussain, M. A., & Khan, M. S. (2026). *NEP 2020 vision for multidisciplinary education through Indian knowledge systems*. https://doi.org/10.5281/zenodo.18612346
3. All India Survey on Higher Education. (2024). *All India Survey on Higher Education (AISHE) 2021–22*. Ministry of Education, Government of India.
4. Bano, F. (2017). *Educational status of Muslim women in India: An overview*. *IOSR Journal of Humanities and Social Science, 22*(6), 10–13.
5. Bazaz, R. Y. (2021). *Exploring gender and caste intersectionality among Muslims: Implications for education, occupation and income*. *Journal of Ethnic and Cultural Studies*.
6. Chowdhury, A., Mete, J. K., Tandon, M., Roy, P. S., Mandal, R., Sahari, S., ... Bose, P. (2024). *Attitude of Muslim parents towards girls' higher education in India*. *Journal of Higher Education Theory and Practice, 24*(3). https://doi.org/10.33423/jhetp.v24i3.6833
7. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
8. Hussain, M., Khan, S., & Khan, S. (2018). *Educational status of Muslim women in India: Issues and challenges*. *International Journal of Research in Social Sciences*.

9. Jahan, S. S. (2025). *Problems of minority women in higher education with special reference to Muslim women*. *RGU Journal of Social Science and Research, 1*(1), 18–21. https://doi.org/10.3254/rgujssr.v1i1.9
10. Malik, A. (2023). *Educational experiences and aspiration of Muslim women in India: Issue and challenges*. *Journal of Social Inclusion Studies, 9*(1), 61–81. https://doi.org/10.1177/23944811231173066
11. Malik, A. (2026). *Navigating access: Muslim women's participation in higher education in India*. *Development in Practice, 36*(3), 519–530. https://doi.org/10.1080/09614524.2025.2605175
12. Prime Minister's High Level Committee. (2006). *Social, economic and educational status of the Muslim community of India (Sachar Committee Report).* Government of India.
13. Rahiman, R. (2023). *Gender, religion and higher education: Strategies of Muslim women students in India*. *Sociological Bulletin, 72*(4), 462–475.
14. Rahman, S. R., Ahmad, S., Alam, M. J., & Khan, M. S. (2025). *Transformative research approaches for contemporary educational issues in the 21st century*. https://doi.org/10.13140/RG.2.2.29987.00803
15. Rahman, S. R., & Alam, M. J. (2026). *भारतीय परंपरा में शासन और नेतृत्व के स्वदेशी मॉडल का समकालीन प्रबंधन में महत्व*. *The Academic, 4*(2), 1038–1045. https://doi.org/10.5281/zenodo.18919454
16. Sahu, B. (2016). *Barriers to higher education: Commonalities and contrasts in the experiences of Hindu and Muslim young women in urban Bengaluru*. *Contemporary South Asia, 24*(2), 145–160.
17. UNESCO. (2025). *Global Education Monitoring Report 2025*. UNESCO Publishing.
18. Yasmin, A., & Kumar, S. S. (2020). *Cultural constraints of Muslim girls' access to higher education in Bandipora district, Jammu and Kashmir, India*. *PalArch's Journal of Archaeology of Egypt/Egyptology, 17*(9), 4957–4969.